नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भारत और जापान के संबंध नए आयामों पर

भारत और जापान के संबंध अब नए आयामों पर दिख रहे हैं .यह केवल आर्थिक सहयोग तक सीमित नहीं रहे हैं, बल्कि वे एक व्यापक रणनीतिक साझेदारी का रूप ले चुके हैं. नई दिल्ली में आयोजित भारत-जापान वार्षिक शिखर वार्ता ने स्पष्ट संकेत दिया है कि दोनों देश आने वाले वर्षों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), रक्षा, ऊर्जा, सेमीकंडक्टर, हरित प्रौद्योगिकी और महत्वपूर्ण आपूर्ति श्रृंखलाओं जैसे क्षेत्रों में मिलकर काम करेंगे. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा विश्वास को दोनों देशों की सबसे बड़ी रणनीतिक पूंजी बताना इस रिश्ते की गहराई को दर्शाता है.

आज वैश्विक व्यवस्था तेजी से बदल रही है. इंडो-पैसिफिक क्षेत्र विश्व राजनीति और अर्थव्यवस्था का केंद्र बन चुका है. चीन के बढ़ते प्रभाव, आपूर्ति श्रृंखलाओं में अस्थिरता और नई तकनीकों की होड़ के बीच भारत और जापान का साथ केवल द्विपक्षीय हितों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे एशिया में स्थिरता, संतुलन और विकास का आधार बन सकता है. दोनों लोकतांत्रिक देशों की समान सोच और नियम-आधारित वैश्विक व्यवस्था के प्रति प्रतिबद्धता इस साझेदारी को और अधिक मजबूत बनाती है.

भारत में एक हजार बायोगैस संयंत्र स्थापित करने की जापानी पहल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई ऊर्जा देने वाली साबित हो सकती है. इससे स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा मिलेगा, किसानों की आय बढ़ाने के अवसर बनेंगे और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए द्वार खुलेंगे. इसी प्रकार सेमीकंडक्टर, बैटरी निर्माण, इलेक्ट्रिक वाहन और हरित ऊर्जा के क्षेत्रों में जापानी निवेश भारत की विनिर्माण क्षमता को नई ऊंचाई देगा. 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसे अभियानों को भी इससे महत्वपूर्ण बल मिलेगा. रक्षा क्षेत्र में सहयोग का विस्तार भी अत्यंत महत्वपूर्ण है. बदलती वैश्विक सुरक्षा परिस्थितियों में दोनों देशों के बीच रक्षा उपकरणों, संयुक्त अभ्यासों और समुद्री सुरक्षा पर सहयोग हिंद महासागर तथा इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में संतुलन बनाए रखने में सहायक होगा. भारत और जापान का साझा दृष्टिकोण केवल सैन्य सहयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि मानवीय सहायता, आपदा प्रबंधन और समुद्री व्यापार की सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में भी दिखाई देता है.

हालांकि इस साझेदारी की सफलता केवल समझौतों पर निर्भर नहीं करेगी. आवश्यक है कि घोषित परियोजनाएं समयबद्ध तरीके से धरातल पर उतरें. जापानी निवेशकों के लिए भारत में सरल और पारदर्शी कारोबारी वातावरण, तेज निर्णय प्रक्रिया और मजबूत आधारभूत संरचना उपलब्ध कराना भी उतना ही आवश्यक है. दूसरी ओर भारतीय उद्योगों को भी जापान की गुणवत्ता, अनुशासन और नवाचार की कार्य संस्कृति से सीख लेकर वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप स्वयं को तैयार करना होगा.

भारत और जापान का रिश्ता केवल व्यापार या निवेश का संबंध नहीं है, बल्कि यह साझा मूल्यों, पारस्परिक विश्वास और दीर्घकालिक रणनीतिक दृष्टि पर आधारित है. यदि दोनों देश इसी गति से सहयोग को आगे बढ़ाते हैं तो यह साझेदारी न केवल दोनों अर्थव्यवस्थाओं को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएगी, बल्कि एशिया में शांति, स्थिरता और समृद्धि की नई इबारत भी लिखेगी. बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत-जापान संबंध वास्तव में इक्कीसवीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक समीकरणों में से एक बनते दिखाई दे रहे हैं.

श्रीराम मंदिर चढ़ावा गबन पर घमासान

राजीव खंडेलवाल

> ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष पर कोई आरोप सीधे नहीं लगता है लेकिन कोषाध्यक्ष होने के नाते समस्त वैधानिक व नैतिक प्राथमिक जिम्मेदारी उन्हीं की होती है. सीज़र की पत्नी संदेह से भी परे होनी चाहिए—यह सिद्धांत सार्वजनिक जीवन में आज भी उतना ही प्रासंगिक है. आस्था की संस्थाओं के लिए तो यह और भी अधिक आवश्यक हो जाता है. आस्था सर्वोपरि, पारदर्शिता अनिवार्य - भगवान श्रीराम करोड़ों लोगों की आस्था के प्रतीक हैं. इसलिए इस प्रकरण का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि श्रद्धालुओं का विश्वास किसी भी स्थिति में कमजोर भंग नहीं होना चाहिए.

अंततः श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की लिखित तहरीर पर मंदिर के चढ़ावे में कथित अनियमितताओं के संबंध में प्राथमिकी दर्ज हुई, आठ छुटभइयों छोटी मच्छलियों की गिरफ्तारी हुई, एसआईटी का गठन हुआ और बाद में ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय तथा ट्रस्टी डॉ. अनिल मिश्रा ने नैतिक आधार पर अपने इस्तीफे सौंप दिए. यह घटनाक्रम देर से ही सही, लेकिन आगे बढ़ा है. अब सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या यह कार्रवाई पर्याप्त है अथवा अभी भी जांच की दिशा और दायरा अधूरा है?

स्थानीय कोतवाली में पहले से कई लिखित शिकायतें (तहरीर) उपलब्ध थीं. फिर प्राथमिकी दर्ज करने में विलंब क्यों हुआ? यदि एसआईटी केवल वही तथ्य संकलित कर रही थी, जिनके आधार पर बाद में मात्र गिनती में हुई गडबडियों के लिए एफआईआर दर्ज हुई, तो स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है कि क्या यह प्रक्रिया आवश्यक थी अथवा इससे कार्रवाई टलती रही? देर आए दुरुस्त आए या फिर दाल में कुछ काला है—यह निर्णय अंततः जांच के निष्कर्ष ही करेंगे.

एसआईटी का कार्यकाल बढ़ा दिया गया, किंतु उसकी अंतरिम रिपोर्ट अभी तक सार्वजनिक नहीं की गई. पारदर्शिता की दृष्टि से यह अपेक्षा स्वाभाविक है कि जनता को कम-से-कम इतना अवश्य बताया जाए कि जांच की दिशा क्या है और किन बिंदुओं पर आगे कार्रवाई प्रस्तावित है. दूसरी ओर, कथित भूमि लेन-देन संबंधी आरोपों पर अब तक न तो कोई अलग प्राथमिकी दर्ज हुई है और न ही उस संबंध में एसआईटी ने जांच की ?

कानून की निष्पक्षता का आकलन प्रायः तुलनात्मक दृष्टि से किया जाता है। लखनऊ के भीषण अग्निकांड में घटना के तुरंत बाद प्राथमिकी दर्ज कर ली गई और उसके बाद विस्तृत जांच के लिए एसआईटी गठित की गई. केजरीवाल मामले में भी एक अभियुक्त के बयान के आधार पर बिना किसी प्राथमिकी जांच के एफआईआर दर्ज हो जाती है. अंततः न्यायालय अपराध का कोई प्रथम दृष्ट्या सबूत न मिलने पर केजरीवाल को आरोपों से मुक्त (डिस्चार्ज) कर देता है. इसी प्रकार अनेक चर्चित मामलों में प्रारंभिक उपलब्ध सामग्री के आधार पर पहले एफआईआर दर्ज हुई और बाद में जांच आगे बढ़ी.

इसके विपरीत, श्रीराम मंदिर प्रकरण में कथित अनियमितताओं की चर्चा, शिकायतें, जांच और कथित बरामदगी जैसी बातें सामने आने के बावजूद प्राथमिकी दर्ज होने में समय लगा. ट्रस्ट व मंदिर से जुड़े व्यक्तियों की असामान्य संम्पति होने के मामले में भी गबन के पैसे का दुरूपयोग कुछ हुआ हैं, के लिए ईडी, आयकर विभाग की जांच तक अभी प्रारंभ नहीं हुई है. यदि यही तथ्य हैं, तो यह प्रश्न स्वाभाविक है कि इस मामले में प्रक्रिया अलग क्यों रही? कानून की विश्वसनीयता तभी बनती है, जब न्याय केवल निष्पक्ष हो ही नहीं, बल्कि निष्पक्ष दिखाई भी दे. आरोप नए नहीं हैं. राम मंदिर निर्माण से जुड़े आर्थिक प्रश्न पहली बार नहीं उठे हैं. 2015-2017 में निर्मोही अखाड़ा और अखिल भारतीय हिंदू महासभा ने विश्व हिंदू परिषद पर राम मंदिर निर्माण के नाम पर जमा 1400 करोड़ रुपये की हेराफेरी के आरोप लगाये थे. वर्तमान में चर्चा तब प्रारंभ हुई, जब पूर्व मंत्री पवन पांडे की शिकायत से अखिलेश ने इस मुद्दे को लपका. क्या भारत घोटालों का देश बन गया है? जीप घोटाला (1948) से लेकर चढ़ावा घोटाला? वर्तमान विवाद तब अधिक चर्चा में आया जब इस विषय को राजनीतिक स्तर पर अखिलेश यादव ने पूर्व मंत्री पवन पांडे द्वारा एक दिन पूर्व की गई शिकायत के आधार पर उठाया इसके बाद ही प्रशासनिक कार्रवाई प्रारंभ हुई.

ऐसे में प्रश्न केवल एक मंदिर या एक ट्रस्ट का नहीं है, बल्कि उन करोड़ों श्रद्धालुओं के विश्वास का है, जिन्होंने अपनी श्रद्धा, भक्ति, आस्था से दान दिया है. निष्पक्ष जांच के लिए नैतिक उत्तरदायित्व. श्रीराम मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र है. इसलिए यहां पारदर्शिता का मानक सामान्य संस्थाओं से भी अधिक होना चाहिए. जांच की समस्त गडबडियो तार्किक और निर्विवाद निष्कर्ष तक पहुँचाने के लिए यह आवश्यक है कि इसकी निगरानी किसी स्वतंत्र न्यायिक व्यवस्था अथवा सक्षम न्यायिक पर्यवेक्षण में हो. इससे जांच की विश्वसनीयता और जनविश्वास दोनों सुदृढ़ होंगे.

(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व अध्यक्ष, बैतूल सुधार न्यास हैं.)

मध्य क्षेत्र की डायरी

मध्यप्रदेश कांग्रेस की कार्यशैली सवालों के घेरे में क्यों?

दिलीप झा

पिछले महीने कांग्रेस मध्यप्रदेश से अपने एक उम्मीदवार को राज्यसभा में भिजवा सकती थी क्योंकि उसके पास मतदान करने वाले विधायकों की संख्या पर्याप्त थी लेकिन कांग्रेस की अंदरूनी गुटबाजी के कारण एआईसीसी की फरमान अथवा पसंद को संसद नहीं पहुंचने दिया गया. यह असाधारण बात है. सूत्र बताते हैं कि मीनाक्षी नटराजन का नामांकन रद्द करवाने में कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं की बड़ी भूमिका रही. बता दें कि तेलंगाना में कांग्रेस की सरकार है और वहां नटराजन के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई गई थी. यह हैरानी की बात है कि मामला कांग्रेस शासित दक्षिण राज्य से निकलकर मध्यप्रदेश पहुंच गया और ऐन वक्त पर नटराजन की उम्मीदवारी निरस्त हो गई. महज दिखावे के लिए कांग्रेस नाटकीय अंदाज में अपने विधायकों को प्लेन में बिठाकर बंगलुरु भेजने की तैयारी में थी. लेकिन सारा ठीकरा बीजेपी पर फोड़ते फोड़ते कांग्रेस खुद बैकफुट पर आ गई और प्रदेश की जनता सब समझ गई कि खोट कांग्रेस के अंदर है, बीजेपी में नहीं. बेवजह बीजेपी को बदनाम करने की इनकी फितरत रहती है. हालात ये हैं कि अलग अलग गुटों में बंटी मध्य प्रदेश कांग्रेस इस समय एक ऐसे कठिन मोड़ पर है, जहाँ पार्टी का हर कदम सवालों के घेरे में है. संगठन के भीतर अनुशासन का अभाव और शीर्ष नेतृत्व की मौन कार्यशैली पार्टी के लिए एक बड़ा संकट बन गई है. हाल ही में दिग्विजय सिंह से जुड़े उज्जैन प्रसंग ने पार्टी को राजनीतिक रूप से बैकफुट पर ला खड़ा किया था, लेकिन इस घटना से भी अधिक चिंताजनक स्थिति तब उत्पन्न हुई, जब प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी की मौजूदगी में ही पार्टी के विधायकों और नेताओं द्वारा वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह के प्रति अमर्यादित शब्दों का प्रयोग किया गया. यह अनुशासनहीनता का ऐसा निचला स्तर है, जो पार्टी की साख के लिए किसी भी चुनावी हार से ज्यादा घातक साबित हो रहा है. कांग्रेस के पुराने नेता बिना लाग-लपेट कहते हैं कि सत्ता का मार्ग कुर्ते की बांह समेटने से नहीं बल्कि हाथ जोड़कर सुगम बनाया जाता है. प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी के नेतृत्व में पार्टी मुख्य रूप से प्रदर्शनों के जरिए सरकार पर दबाव बनाने की रणनीति पर काम कर रही है. निस्संदेह, प्रदर्शनों से राजनीतिक माहौल बनाया जा सकता है, लेकिन सत्ता के शिखर तक पहुँचने के लिए केवल जुझारूपन पर्याप्त नहीं है. अब कांग्रेस को बांहें चढ़ाकर सड़कों पर उतरने की उग्र संस्कृति से बाहर निकलकर, जनता और कार्यकर्ताओं के सामने हाथ जोड़कर विनम्रता के साथ संगठन बनाने की नई रणनीति अपनानी होगी. जमीनी स्तर पर जुड़ाव और संवाद ही सत्ता का मार्ग प्रशस्त करेगा.

पिछले 20 वर्षों में संगठन की जो स्थिति रही है, जहाँ ग्राम पंचायत स्तर तक पहुँच का अभाव है, उसे सुधारने के लिए विनम्रता और सर्व-समावेशी दृष्टिकोण ही एकमात्र विकल्प है. इस पूरे घटनाक्रम और संगठन में बढ़ती मनमानी से उमंग सिंघार, अरुण यादव और अजय सिंह राहुल जैसे कद्दावर नेता बेहद दुखी और नाराज बताए जा रहे हैं. सूत्रों की मानें तो उन्होंने शीर्ष नेतृत्व को इस गंभीर स्थिति से अवगत करा दिया है. यह स्पष्ट है कि आज मध्य प्रदेश कांग्रेस में सब कुछ ठीक है का दावा करना बेमानी होगा. पार्टी के भीतर पनपा यह असंतोष यदि समय रहते नहीं सुलझाया गया, तो यह संगठन को और गहरे संकट में डाल सकता है. अब समय आ गया है कि मध्य प्रदेश कांग्रेस एकल नेतृत्व की परिपाटी से बाहर निकले और 'सामूहिक नेतृत्व' को प्राथमिकता दे. मालवा, विंध्य, बुंदेलखंड, नर्मदापुरम और महाकौशल जैसे अंचलों के जनाधार वाले नेताओं को न केवल उचित प्रतिनिधित्व, बल्कि निर्णय लेने की वास्तविक शक्ति और अधिकार दिए जाने की सख्त जरूरत है. यह भी शत-प्रतिशत सही है कि पार्टी के भीतर ऊर्जा का संचार करने के लिए कमलनाथ, अजय सिंह, अरुण यादव, ओंकार सिंह मरकाम, लखन सिंह घनघोरिया, उमंग सिंगार, विक्रांत भूरिया और फूल सिंह बरैया जैसे अनुभवी नेताओं का अनुभव पार्टी की सबसे बड़ी संपत्ति है. साथ ही, 2018 के चुनावों में अरुण यादव की रणनीति को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले चंद्रिका प्रसाद द्विवेदी जैसे कुशल रणनीतिकारों को भी अब संगठन में सक्रिय जिम्मेदारी और सामूहिक नेतृत्व का हिस्सा बनाने की आवश्यकता है. इसलिए कांग्रेस आलाकमान को अब इस निर्णय करना चाहिए कि भाजपा के सत्ता के चक्रव्यूह तोड़ना है अथवा मेरा आदमी तेरा आदमी की राजनीति में ही उलझे रहना है जो उसे सत्ता से दूर किए हुए है. इस बात से कांग्रेस कार्यकर्ता भलीभांति परिचित हैं कि एक तरफ अवांछित बयानों और वरिष्ठ नेताओं के प्रति अमर्यादित व्यवहार का बोझ पार्टी की साख को खोखला कर रहा है, तो दूसरी तरफ नेतृत्व की खामोशी कार्यकर्ताओं का मनोबल तोड़ रही है. अब कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व को कड़े और निर्णायक कदम उठाने होंगे. जब तक बयान, ढांचा और संवाद तीनों पर ठोस काम नहीं होगा और जनाधार वाले नेताओं को अधिकार संपन्न नहीं बनाया जाएगा, तब तक सत्ता का मार्ग सिर्फ नारों तक सीमित रहेगा. यह कांग्रेस के लिए ध्रुव सत्य है. मध्य प्रदेश कांग्रेस के सामने अब दो ही विकल्प हैं- या तो वह गुटीय राजनीति और एकल नेतृत्व के अहंकार में इसी चक्रव्यूह में उलझी रहे, या फिर अनुभवी क्षत्रपों को साथ लेकर एक समावेशी सामूहिक नेतृत्व खड़ा करे. सत्ता की दहलीज पार करने के लिए अब संगठनात्मक अधिकारों का विकेंद्रीकरण ही एकमात्र समाधान है. अगर कांग्रेस संगठन ऐसा करने में सफल नहीं हो पाती है तो मध्यप्रदेश में उसकी वापसी मुंगेरी लाल के हसीन सपने जैसे ही बने रहेंगे.

राघव चड्डा को अदालत की नसीहत

राजनेताओं का जीवन सार्वजनिक होता है, इसलिए उन्हें अपने कार्यकलापों व नीतियों के लिए स्वाभाविक रूप से असहमति, आलोचना, विरोध के अलावा व्यंग्य को सहजता से स्वीकार करना चाहिए. स्वस्थ लोकतंत्र में इन बातों पर रोक नहीं लगाई जा सकती. संविधान ने भी अभिव्यक्ति का मूलाधिकार दे रखा है. आम आदमी पार्टी छोड़कर बीजेपी में शामिल हुए राघव चड्डा के खिलाफ सोशल मीडिया पर चल रही व्यंग्यात्मक पोस्ट को हटाने से दिल्ली उच्च न्यायालय ने इनकार कर दिया. अदालत ने कहा कि नेताओं को व्यंग्यात्मक मजाक को अपने पेशे का जरूरी व अपरिहार्य हिस्सा मानते हुए इसे झेलने की आदत डालनी चाहिए. न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद ने कहा कि राजनीतिक गठबंधन में बदलाव, कामकाज व नीतियों के बारे में मजाक राजनीति का अहम हिस्सा है. इस मामले में पर्सनैलिटी राइट्स कोई मुद्दा नहीं है. हाईकोर्ट के इस फैसले से यह स्पष्ट हो गया कि किसी व्यंग्यात्मक टिप्पणी, बयान या कार्टून से किसी नेता की न तो मानहानि होती है, न उसके व्यक्तित्व के अधिकार का उल्लंघन होता है. नेता को ऐसे मामलों में उदारता व सहनशीलता अपनानी चाहिए. इतना अवश्य है कि व्यंग्य में किसी तरह का भद्दापन या अश्लीलता नहीं आनी चाहिए. कुछ वर्षों पूर्व बंगाल के मुख्यमंत्री पद पर रहते ममता बनर्जी ने एक कार्टूनिस्ट के बनाए कार्टून से खफा होकर उसे गिरफ्तार करवाया था. वास्तव में ममता का यह कदम अलोकतांत्रिक व असहिष्णुतापूर्ण था. इसके सर्वथा विपरीत देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने कार्टून पत्रिका 'शंकर्स वीकली' प्रकाशित करने वाले कार्टूनिस्ट शंकर को अपने ऊपर कार्टून बनाने के लिए प्रोत्साहित किया था. साहित्य में व्यंग्य विधा का अपना महत्व है. सांकेतिक व्यंग्य स्वतंत्र अभिव्यक्ति का माध्यम है. चीन या उत्तर कोरिया जैसे तानाशाही देशों में यह अपराध हो सकता है, भारत जैसे मजबूत लोकतंत्र में नहीं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

गर्मी से निपटने का तरीका अच्छा यूरोपवासी अपनाएं गमछा

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, इंग्लैंड और फ्रांस जैसे यूरोप के देश भीषण गर्मी से जूझ रहे हैं. फ्रांस में 1,500 से भी ज्यादा लोग हीटवेव या ग्रीष्म लहर की वजह से मौत के मुंह में चले गए. ठंडे देशों में गर्म मौसम कहर ढा रहा है. पार्क और पर्यटन स्थलों पर लोगों पर पानी के फव्वारे छोड़े जा रहे हैं ताकि उन्हें राहत मिले. भारत के लोग गर्मी के अभ्यस्त हैं और 45 डिग्री तापमान में भी रह लेते हैं. लेकिन यूरोप के गोरों को 30 डिग्री से ऊपर का तापमान बर्दाश्त नहीं होता. 40 डिग्री में तो उनकी जान ही निकल जाती है. आप कोई बढ़िया-सा उपाय बताएं कि इस मुसीबत में यूरोपवासी क्या करें?'

हमने कहा, 'सबसे पहले तो वहां के लोग अपने कोट, ओवरकोट, वेस्ट कोट, बो, टाई आलमारी में बंद कर दें और आधी बांह वाला मोदी कुर्ता पहनें. टाइट पतलून की बजाय ढीली-ढाली धोती पहनें. भारत से गमछा मंगवाएं जो मल्टीपर्पज रहता है. यूपी-बिहार में इसके बिना काम नहीं चलता. गर्म हवा से बचना है तो सिर और कान पर अच्छी तरह गमछा लपेट लो. पसीना आए तो उसी से पोंछो. बाजार जाओ तो सब्जी और फल गमछे में बांधकर ले आओ. भूदान आंदोलन के प्रणेता आचार्य विनोबा भावे के पवनार आश्रम में टेबल फैन, सीलिंग फैन या कूलर नहीं था.

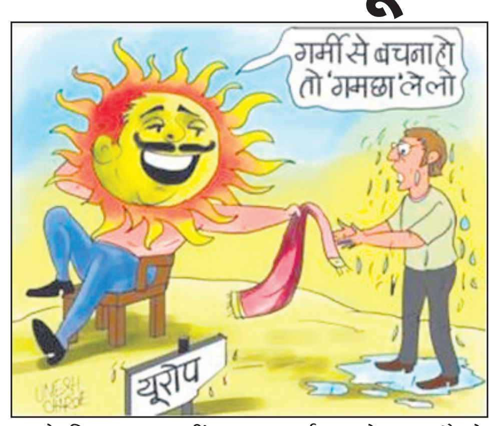

गर्मी के मौसम में वह पानी भरी बाल्टी पास में रखते थे और उसमें गमछा भिगोकर बार-बार अपना बदन पोंछते रहते थे. पत्रकारों ने उन्हें ऐसा करते देखा था. अंग्रेज और फ्रांसीसी भी ऐसा करके देखें. तरावट महसूस होगी और मजा आएगा. टर्किश टॉवेल की तुलना में गमछा सस्ता और बेहतरीन होता है. नहाने के बाद इसके दो सिरे पकड़कर पीठ भी पोंछ सकते हो. जरूरत पड़ी तो किसी चबूतरे या घास पर गमछा बिछाकर बैठ या लेट भी सकते हो. लाल गमछा कंधे पर डालकर निकलो तो लोग भैया-भैया कहने लगेंगे. दुखी या गमजदा व्यक्ति गमछे से अपने आंसू पोंछ सकता है. कम लागत में किसी का सत्कार करना हो तो उसके गले में गमछा डालकर हाथ में नारियल पकड़ा दो. वह नारियल फोड़कर खा लेगा और गमछे से मुंह पोंछ डालेगा.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12308

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3		■	4	5
6		■		■	7		
	■	8		9		■	
10	11				■	12	
■	13		■	14			■
15	■	16	17		■	18	19
20	21			■	22		
23		■	24			■	

ऊपर से नीचे
1. दाम ठहराने या सौदा पटाने की बातचीत 2. वहां, तहां, उधर 3. कुंदरु (सं.) 4. आमदनी 5. संगीत में सात स्वरों के उतार-चढ़ाव का क्रम 7. पानी में होने वाली एक प्रकार की घास, मैल 8. समुद्र में या समुद्र के किनारे रहने वाला 9. पानी में डुबकी लगाकर चीजें ढूंढ़कर लाने वाला 11. खानदान, परिवार 12. टालमटोल 15. भेद, फरक, फासला 17. लवण 19. व्याकुल, दुखित, अधीर 21. परिधि, घेरा, श्रेणी, दर्जा 22. सेतु, किसी नदी-नाले आदि के आरपार जाने के लिए बनाया हुआ रास्ता

बाएं से दाएं
1. आंखों का एक रोग जिसमें पुतलियों के आगे एक झिल्ली सी आ जाती है 4. आशा, सहारा 6. बुरी आदत 7. भीरु, डरपोक 8. स्पष्टवादिता 10. लौंग का पेड़ या उसकी शाखा, एक प्रकार की बंगाली मिठाई (सं.) 12. साधारण, जनता का, एक फल 13. तीर, बाण (सं.) 14. गड्डा करना, नक्काशी करना 16. बंदर 18. पिता का भाई 20. बांटने की क्रिया या भाव 22. पवित्र, पाक, शुभ (सं.) 23. हिफाजत 24. सरोज, पंकज

Solution 12307

भी	म	से	न	■	बा	ध	क
नी	म	■	का	ग	जी	नी	बू
■	ता	मी	र	■	ग	■	त
सौ	■	च	ना	■	र	सौ	र
र	म	ना	■	मा	■	गं	■
ज	ल	■	अं	त	■	ध	क
ग	म	ना	ग	म	न	■	वि
त	ल	प	द	■	दी	न	ता

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्रों व भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ होगा. सुखद यात्रा होगी. वर्ष के मध्य में वाहन का सुख मिलेगा. ख्याति एवं राजकीय सम्मान की प्राप्ति होगी. वर्ष के अन्त में शिक्षा में व्यवधान आयेगा. आर्थिक कमी के कारण योजनायें वाधित होंगी. मित्र के कारण हुये विवाद से भागदौड़ रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भाईयों से राजनैतिक लाभ होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक कमी एवं परेशानी से राहत मिलेगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को ख्याति प्राप्ति होगी. राजकीय सम्मान मिलेगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को मित्रों एवं भाईयों से राजनैतिक लाभ प्राप्त होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को आर्थिक समस्या का समाधान होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पूंजी निवेश में सतर्कता बांछनीय.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक चंचल, कोमल तथा आकर्षक व्यक्तित्व वान होगा, इनके कार्य एक से अधिक होते हैं, माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा, यात्राप्रिय एवं लेखनादि में अधिक रूचि रखने वाला होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

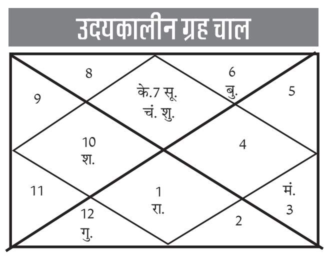

पंचांग

रा.मि. 13 संवत् 2083 आषाढ कृष्ण चतुर्थी शनिवासरे दिन 9/42, धनिष्ठा नक्षत्रे दिन 11/47, प्रीति योगे दिन 3/48, बालव करणे सू.उ. 5/14, सू.अ. 6/46, चन्द्रचार कुम्भ, शु.रा. 11, 1, 2, 5, 6, 8 अ.रा. 12, 3, 4, 7, 9, 10 शुभांक- 4, 6, 0.

व्यापार भविष्य

आषाढ कृष्ण चतुर्थी को धनिष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से गुड, खांड, तिलहन, तेल, अलसी, सरसों में अच्छी मंदी होगी, रूई, चांदी के भाव में तेजी का योग है. आज 10 बजकर 30 मिनिट से 15 मिनिट के रूख पर व्यापार करना लाभप्रद रहेगा. भाग्यांक 1925 है.

मेष- सहयोगी आपके व्यवहार से अपमाति महसूस कर सकते है, धार्मिक कार्यों में मानसिक संतोष बना रहेगा, कार्यक्षेत्र में सफ्लता मिलेगी, उत्साह एवं लगन रहेगी.

वृषभ- मनमौजी रवैया नुकसानदायी हो सकता है, परिचितों से नुकसान हो सकता है, शारीरिक अस्वस्थ्यता एवं मानसिक पीड़ा हो सकती है. सुख साधनों में वृद्धि होगी.

मिथुन- कार्यक्षेत्र में मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा, सुविधा के अभाव से परेशानी होगी, पारिवारिक क्लेश एवं विवाद से दूर रहें. अनावश्यक तनाव से बचें.

कर्क- भौतिक सुख सुविधा पर बड़े खर्च की संभावना है, अपनी ताकत व पहुंच का सही लाभ लेने में नाकाम रहेंगे, न्यायालयीन प्रयासों में सफ्लता मिलेगी.

सिंह- विपरीत हालात में समझौता करना लाभकारी हैं, लेखन अध्ययन, एवं नवीन कार्यों की योजनाओं पर विचार होगा, जवाबदारी के कार्यों में व्यस्तता रहेगी.

कन्या- व्यर्थ की कार्यों में समय बीतेगा, पुराने विवाद के समाधान के आसार हैं, भूमि भवन के कार्यों में सावधानी रखें, परीक्षा प्रतियोगिता के परिणाम उत्तम रहेंगें.

तुला- लेन देन के मामले आपका पक्ष मजबूत होगा, कर्जदारी से छुटकारा मिल सकता है, इच्छानुसार सफ्लता प्राप्त होने का योग है. विवादास्पद कार्य सफ्ल होंगे.

वृश्चिक- जोखिम के कार्यों में रूचि बढ़ेगी, पारिवारिक मामलों में अपनों की मदद से लाभ होगा, मित्रों का सामान्य सुख मिलेगा, अधूरे कार्यों के पूर्ण होने का योग है.

धनु- अनुशासन की कमी से काम का बोझ बढ़ेगा, केरिअर में अच्छी प्रस्ताव मिलेंगे, शारीरिक श्रम एवं मानसिक प्रसन्नता रहेगी, अतिथि वृषभमन हो सकता है.

मकर- कार्य विस्तार की संभावना बन सकती है, सामाजिक जीवन में आपकी भूमिका की सभी प्रशंसा करेंगे.दैनिक नियमितता का ध्यान रखें.

कुम्भ- आपकी भूमिका की सभी प्रशंसाा करेंगे, युवाओं के कैरिअर में बेहतर अवसर मिल सकते हैं, स्थायी प्रयासों में लाभ होगा, मांगलिक कार्यो में खर्च होगा.

मीन- तयशुदा कार्यक्रम में बदलाव से खिन्नता बढ़ेगी, वैभव के सामान पर विशेष खर्च की संभावना है. आजीविका के प्रयासों में सफ्लता मिलेगी.

SUDOKU 7440

2	9			5				4
4			2		7		8	
	1	6		8				3
8		5		9				7
3	6			2			1	9
1				3		5		2
5				7		6	3	
	3		1		8			5
9				6			2	1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7439

7	8	1	6	9	4	2	5	3
2	6	4	5	3	6	1	7	9
5	3	9	1	2	7	4	6	8
9	5	8	7	4	1	3	2	6
1	2	3	9	5	6	7	8	4
4	7	6	3	8	2	9	1	5
3	9	7	2	6	5	8	4	1
6	4	2	8	1	9	5	3	7
8	1	5	4	7	3	6	9	2